Yayawari
via bhojpuri

बांट-बखरा

लोककथा

अनुवादक
सुधीर कुमार मिश्रा

आवाज
प्रतिमा योगी

बाँट-बखरा

लोककथा

अनुवादक –सुधीर कुमार मिश्र

“ईश्वर बृज” फ़ाउंडेशन के तहत माटी परियोजना के अंतर्गत अनूदित

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: मई, 2023

एगो गाव मे एगो किसान रहत रहे। उनका दुगो बेटा रहे। सभे मिल के मेहनत मजूरी करे आ जवन मिले ओह से आपन गुजर-बसर करे। किसान का लगे एगो गाय रहे जवना के दूध बेंच के उ चार पईसा कमात रहे। किसान के बड़का लईका बहुते धूर्त रहे आ छोटका लईका बहुते सीधा। जब ले किसान जियत रहे मय अधिकार उ आपन हाथ मे राखत रहे एहिसे बड़का के धूर्तता ना चल पावत रहे।

एक दिन किसान मर गइल। उनका मरला के बाद दुनो भाईयन मे बटवारा के बात उठल। बड़ भाई का मन मे बेईमानी रहे एहिसे उ खुदे बँटवारा करे बइठल। दु चिझन के के लेवे आ एगो अपना खाति लेवे आ दुसरका छोटका भाई के देवे। एह तरे घर मे जवन गृहस्थी के समान रहे ओहमे से निमनका खुदे लेवे आ छोटका के खरबका देके बंटवारा पूरा कऽ लेलस। जे केहु बड़का भाई के हरकत देखे उ ओकरा के भला बुरा कहे बाक़िर बड़ भाई ओकरा के डांट के भगा देवे कि हमनी दूनों भाईयन के बीचे प्रेम से बँटवारा हो रहल बा, तहरा के के बोलावल हऽ। छोट भाई चुप रह गइल। छोटका के चुप देखि के लोग उहाँ से चल जाव। बड़ भाई के बेईमानी देख के छोटका के खीस तऽ ढेरे आइल बाकिर उ आपन संतोसी स्वभाव के कारणे चुप रह गइल।

घर गृहस्थी के मय चीझन के बंटवारा हो गइल। एह बंटवारा के बादो घर मे तीन गो चीझ बांचल, खेत, एगो गाय आ एगो कंबल। गाँव के लोग कहल कि खेत आधे-आध बाँट लऽ लो बाक़िर बड़का भाई ओह लो के डांट के भगा दिहले। बाक़िर